

Living the LOTUS

Buddhism in Everyday Life



VOL. 168

Founder's Essay

उपयुक्त चिकित्सा का नुस्खा

पुण्डरीक सूत्र में बुद्ध हमें आश्वस्त करते हैं कि "जो लोग धर्म को सुनते हैं, उनमें से कोई भी बुद्ध बनने में असफल नहीं होगा"-यह उस सत्य का ध्यान कराता है जो किसी को भी मुक्ति दिला सकता है। हालाँकि, जिस तरह एक डॉक्टर बीमार के रोग के लक्षणों और उसकी गंभीरता के अनुसार दवा लिखता है, इस सत्य को इस रूप में प्रदर्शित करना चाहिए जो व्यक्ति और उनके दुखों के अनुकूल है-अन्यथा, यह वास्तव में उस व्यक्ति को मुक्ति दिलाने में मदद करना असंभव है।

विशेष रूप से व्यक्ति के उपयुक्त नुस्खा उपायकौशल्य का प्रश्न है। ऐसा नहीं करने में करुणा का अभाव है। धर्मदेशना करने में प्रमुख सिद्धांतों में से एक की बातें करते और फिर लोगों की समझ में नहीं आने पर, "उनकी ग्राह्य क्षमता तीव्र नहीं है" जैसे बहाने बनाते हैं।

यदि आप किसी को पीड़ा से मुक्ति दिलाने में मदद करने के बारे में गंभीर हैं, तो आप अपने अनुभवों के साथ-साथ अपने ज्ञान की सारी शक्तियों को समाविष्ट करने में कुछ उठा नहीं रखेंगे।

करुणा के इस बौद्धार के साथ, चाहे उनके उत्तरों में कितनी भी रुखाई क्यों न हो, आप किसी भी तरह का प्रतिकार नहीं करेंगे और नहीं आप उनके साथ वादविवाद में या अपने शब्दों के साथ कोमल आलिंगन करके उन्हें खराब करेंगे।

निकक्यो निवानो, काइसो जुइकान 9
(कोसेइ प्रकाशन, 1997), पीपी। 66 - 67

Living the Lotus Vol. 168 (September 2019)

Senior Editor: Koichi Saito
Editor: Kensuke Suzuki
Copy Editor: Parmita Shekhar

Living the Lotus is published monthly
by Rissho Kosei-kai International,
Fumon Media Center, 2-7-1 Wada,
Suginami-ku, Tokyo 166-8537, Japan.
TEL: +81-3-5341-1124
FAX: +81-3-5341-1224
Email: living.the.lotus.rk-international@kosei-kai.or.jp

रिश्शो कोसेईकाई गृहस्थों की संस्था है जिसका पवित्र ग्रन्थ सद्धर्म पुण्डरीक सूत्र एवं अन्य दो लघु सूत्रों का संकलन है। इस संस्था को संस्थापक निकक्यो निवानो एवं सह-संस्थापक म्योको नागानुमा ने सन् १९३८ ई० में स्थापित किया था। यह उन साधारण स्त्रियों एवं पुरुषों की संस्था है जिन्हें बुद्ध में श्रद्धाविश्वास है तथा जो बुद्ध के उपदेशों के अनुसार चलते हुए अपने आध्यत्मिक जीवन को समृद्ध बनाते हैं।

प्रेसिडेण्ट का दिशानिर्देश निचिको निवानो, के अन्तर्गत हम देश एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तरों पर अन्य संस्थाओं के साथ मिलकर शान्ति एवं कल्याण के लिये तत्पर होकर परोपकार के कार्य में सलग्न हैं।

"लिविंग द लोटस: बुद्धिज्म इन एवरीडे लाइफ" का उद्देश्य यह दर्शाना है कि जैसे सरोवर के कीचड़ से निकलकर कमल खिलता है वैसे ही पुण्डरीक सूत्र की शिक्षा का दैनिक जीवन में अनुशरण के प्रयास से हमारा जीवन समृद्ध बनता है, हमारा जीना सार्थक होता है। इसका संस्करण के माध्यम से दुनियाँ में लोगों के दैनिक जीवन में बौद्धधर्म की शिक्षा को सरल बोधगम्य बनाना है।



क्योंकि हम अलग हैं



श्रद्धेय निचिको निवानो
प्रेसिडेण्ट रिश्शो कोसेइ काइ



हृदय जो हर किसी को पसंद करता है

कि नो त्सुरायुकी (872-945) ने “प्राचीन एवं वर्तमान समय के जापानी कविताओं का संग्रह” में साम्राज्य द्वारा पहली प्रायोजित वाका कविता के संग्रह को सम्मिलित किया है जिसमें उनकी अपनी एक प्रेम कविता है:

“इस लोक का तौर तरीका,
हवाओं की तरह,
सबके आरपार बहता है,
प्यार से सोचना
किसी अनदेखे विषय का।”

एक प्रेम कविता के रूप में पढ़कर, इसे अपने तरीके से समझा जा सकता है। हालाँकि, किसी ने प्रस्तावित किया है कि यह कविता वास्तव में एक ऐसी सच्चाई के बारे में है जिसके बारे में हम शायद ही जानते हों: हम अपने दिलों के तल से प्यार करते हैं और संसार में वर्तमान सभी चीजों के प्रति सद्भाव के भाव का अनुभव करते हैं।

हालाँकि, वास्तव में, हम देख सकते हैं कि स्थितियाँ वैसी नहीं हैं जैसे कि इस कविता में है। सोचने और देखने के विभिन्न तरीके लोगों को बहस करने, शत्रुता दिखाने और एक-दूसरे के साथ संबंधों को काटने के लिए प्रेरित करते हैं। यहाँ तक कि यह देशों को एक-दूसरे पर हथियार चलाने के लिए प्रेरित करते हैं। दुर्भाग्य से, धर्मों के बीच संघर्ष अभी भी एक वास्तविक समस्या के रूप में मौजूद है-बहुत से लोग पीड़ित और चिंतित हैं क्योंकि वे यह स्वीकार करने में असमर्थ हैं कि अन्य लोग उनसे अलग हैं, यहाँ तक कि उनके साथ निरर्थक झगड़े में उलझ कर रह जाते हैं।

इन स्थितियों में, एक कार्य हम कर सकते हैं कि हम एक अपना व्यक्तिगत मानदण्ड बना ले कि अन्य लोग हमसे अलग हैं और उन मतभेदों को मतभेद के रूप में स्वीकार करते हैं। ऐसा करने के लिए, हमें पहले यह अहसास होना चाहिए कि “हमें भी इस लोक की समस्त चीजों के लिए प्यार का भाव और दया से भरा हृदय है।” ऐसा करके, हम अपने और दूसरों के बीच के भेदों की अच्छाई को देखना शुरू कर देंगे।



हमारे अंतर का अर्थ और उसकी अच्छाई

हम सभी अलग-अलग कारणों और स्थितियों के कारण पैदा हुए हैं। इसके अतिरिक्त, जैसे-जैसे हम बड़े होते हैं, हममें से प्रत्येक विशिष्ट अनुभवों से गुजरते हैं, जो प्रत्येक के विशिष्ट चरित्र का निर्माण करते हैं।

इसलिए, यह काफी स्वाभाविक है कि आपका सोचने और देखने का तरीका, आपकी जातीय और शारीरिक गठन के बारे में कुछ भी नहीं कहना, अन्य लोगों से अलग है। इन भेदों को दूसरों के साथ लड़ने या उन्हें अलग रखने का कारण बनाना अपने आपके व्यक्तित्व को नकारने के समान है।

धर्म की दुनिया में, यह स्वाभाविक है कि, अपने कार्मिक अवस्था के अनुसार लोग मुक्ति के लिए अलग-अलग मार्ग अपनाते हैं। कुछ लोग ईसाई धर्म की शिक्षा के माध्यम से मुक्ति पाते हैं तो दूसरे लोग इस्लाम या बौद्ध धर्म की शिक्षा के माध्यम से। शांति की कामना करनेवाले अनेक पद्धतियों को अपनाते हैं, उनमें श्रद्धाविश्वास रखते हैं। लोगों को देखने और विश्वास करने के लिए कई शिक्षाएँ हैं। पृथ्वी पर यहाँ रहने वाले सभी लोगों के मन की शांति पाने के लिए, विभिन्न धर्मों और धार्मिक संप्रदायों ने विशिष्ट पद्धतियाँ विकसित की हैं जो एक दूसरे के पूरक हैं।

लोगों को मन की शांति की ओर प्रवृत्त करने की उनके प्रेम और करुणा की शिक्षा धर्म के साथ जुड़ा है। तब, जब प्रेम और करुणा हममें धर्म से आते हैं, और परिणामस्वरूप “दूसरों के लिए प्रेम और सहिष्णुता से भरा हृदय” जो हमारे भीतर दबा है, उभर आता है और हम उसे अभ्यास में लाने से अपने को रोक नहीं सकते हैं। बौद्ध धर्मदेशना के संदर्भ में, यह बोधिसत्व की जीवन शैली है।

कभी-कभी, हम अचानक अपने और दूसरों के बीच के अंतर को महसूस करते हैं और उनके प्रति दयाभाव के प्रदर्शन में असमर्थ होते हैं। जब ऐसा होता है, तो इन अंतरों को समझना हमारे लिए आसान होता है, यदि हम अपनी दृष्टि दौड़ाते हैं- यह बाहर की ओर देखना है-अपने हृदय के भीतर को।

जब मैं अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में भाग लेता हूँ और किसी ऐसे व्यक्ति से सामना होता है जो अलग विचार रखता है, तो मुझे लगता है कि जानने का सुनहरा अवसर है कि उसके सोचने का तरीका है, मुझसे भिन्न है। आखिरकार, इस भिन्नता से, मुझे यह जानने का अवसर मिलता है कि अभी भी बहुत कुछ है जो मैं स्वयं नहीं जानता हूँ। ज़ोर-ज़ोर से बोलकर अपने विचार थोपने और अपने भिन्न विचारों को लेकर एक-दूसरे को घेरने की कोशिश करने के बजाय, क्या हम सभी खुश नहीं हैं जब हम अपने मतभेदों को समझकर, उन्हें स्वीकार करते हैं, एक-दूसरे के साथ मिलते हैं, और सद्भाव पैदा करते हैं जो हमारे लिए सारी खुशियाँ लाता है?

पुण्डरीक सूत्र के परिवर्त-5 से “औषधीय जड़ी-बूटियों का दृष्टांत”: उद्धृत करते हैं। “तथागत द्वारा देशित धर्म का एक ही स्वाद और एक ही गुण है।” धर्मों के सामान्य लक्ष्य, तथा साथ ही हम में से हर एक के हृदय के अंदर दयाभाव के वास के बारे में सोचना है। हम सभी अंतरिक्ष यान में सहयात्री हैं, जो एक अर्थ में, हमें मन की शान्ति और खुशी का आश्वासन देता है-ब्रह्मांड का सत्य एक ही स्वाद और एक ही गुण है। दरअसल, हमें यह साबित करने का मिशन सौंपा गया है।

कोसेइ से, सितंबर 2019



समेकित त्रिविध पुण्डरीक सूत्रः प्रत्येक अध्याय का सारांश एवं मुख्य बिन्दुयें

सद्धर्मपुण्डरीक सूत्र अध्याय 10: धर्मभाणक (2)

धर्मभाणक के आचरण की पाँच बातें

कहा गया है कि जो भी पुण्डरीक सूत्र की एक गाथा या वाक्यांश से प्रसन्न होता है, वह बोधिज्ञान प्राप्त कर लेगा। बुद्ध ने पुनः कहा कि जो सूत्र की एक गाथा को ग्रहण करता, धारण करता, पढ़ता, पाठ करता, व्याख्या करता और प्रतिलिपि बनाता है, वह भी बोधिज्ञान प्राप्त कर लेगा। इस कथन को अनदेखा करना आसान है, जैसाकि कथन सरल प्रतीत होता है, लेकिन इसमें महत्वपूर्ण पाँच आचरणों का उल्लेख है जिसमें धर्मभाणक को संलग्न रहना चाहिए। यहाँ पाँच आचरणों क्या हैं, उनका उल्लेख है।

“ग्रहण करना और धारण करना” का अर्थ, धर्मदेशना को सुनने और स्वीकार करने के अपने संकल्प की पुष्टि करना है।

“पढ़ना” का अर्थ, धर्मदेशना को बार-बार दुहराना है।

“पाठ करना” का अर्थ, धर्मदेशना को अपने स्मृति पटल पर अंकित कराना है जिससे कि सब कण्ठस्थ हो जाय।

“व्याख्या करना” का अर्थ, दूसरों को उनके लाभ के लिए धर्मदेशना को विस्तार में समझाना है।

“प्रतिलिपि बनाना” का अर्थ, प्रतिलिपि बनाकर सूत्र का पूरे विश्व में सर्वत्र प्रचार प्रसार करना है।

इन पाँच आचरणों में से प्रत्येक पुण्डरीक सूत्र के सच्चे अभ्यासियों के लिए आवश्यक है।

तथागत के दूत

पुण्डरीक सूत्र की महान विशिष्टता है कि यह दूसरों के लाभ के लिए धर्मदेशना पर महत्व देता है और विश्व में सर्वत्र धर्मदेशना के प्रचार प्रसार के साथ-साथ इस तथ्य पर जोर देता है कि, इस तरह के कार्यों को कार्यरूप दिए बिना, मानव समाज को कभी भी मुक्त नहीं कराया जा सकता है।

इस परिवर्त में निम्नलिखित वाक्यांश आया है, जिसे परिवर्त का प्रथम महत्वपूर्ण बिंदु माना जा सकता है: “यदि, मेरे परिनिर्वाण के उपरान्त, ये कुलपुत्र एवं कुलपुत्रियाँ इस सद्धर्मपुण्डरीक सूत्र का एक भी वाक्यांश किसी एक व्यक्ति के साथ साझा करने में सक्षम हैं, आपको पता होना चाहिए कि वे तथागत के दूत हैं, जिन्हें तथागत ने अपने कार्यों के सम्पन्न



कराने हेतु भेजा है। यह और भी अधिक बड़ी बात है, जो एक बड़ी सभा में एकत्रित लोगों के हेतु धर्मोपदेश करते हैं।”

तथागत के चीवर, आसन एवं आवास के तीन नियम

लेकिन पुण्डरीक सूत्र का पालन करनेवालों में किस प्रकार की मानसिकता होनी चाहिए, जब वे धर्म के प्रचार प्रसार में सक्रिय रूप से संलग्न रहते हैं? इस परिवर्त के अगले मुख्य बिंदु के रूप में इसका स्पष्ट उल्लेख, “तथागत के चीवर, आसन एवं आवास के तीन नियम” में हुआ है। (“नियम” का अर्थ है सही मार्ग, मानक या मानदंड।)

सूत्र के इस भाग में निम्नलिखित वाक्यांश सम्मिलित हैं: “तथागत के परिनिर्वाण के उपरान्त, यदि कोई कुलपुत्र एवं कुलपुत्रियाँ हैं जो इस सद्धर्मपुण्डरीक सूत्र को चार समूहों में उपदेश करने की इच्छा रखती हैं, तो उन्हें कैसे उपदेश करना चाहिए? इन कुलपुत्रों एवं कुलपुत्रियों को तथागत के आवास में प्रवेश करना चाहिए, तथागत के चीवर को धारण करना चाहिए तथा तथागत के आसन पर बैठना चाहिए। फिर, चार समूहों के लिए व्यापक रूप से इस सूत्र का उपदेश करना चाहिए।”

यहाँ जिन चार समूहों का उल्लेख किया गया है, वे चार भिक्षु,



भिक्षुणी, उपासक और उपासिका वर्ग के शिष्य हैं।

तीन नियम-तथागत के आवास में प्रवेश करना, तथागत के चीवर को धारण करना, तथा तथागत के आसन पर बैठना-ये केवल बड़े महत्त्व के उपदेश नहीं हैं; ये अमूल्य शब्द सभी प्राणियों के द्वारा हृदय से प्रशंसित है। इनका अर्थ शीघ्र बाद में दिया जा रहा है: "तथागत का आवास सभी प्राणियों का महाकरुणामय हृदय है। तथागत का चीवर लचीला तथा सहिष्णु मन है। तथागत का आसन सभी वस्तुओं की शून्यता है।"

संक्षेप में, यह वाक्यांश बताता है कि हमें करुणामय मन से तीन स्तरों पर धर्मोपदेश करना है, लचीला एवं सहिष्णु मन से, तथा शून्यता के बोध के धरातल पर उतरकर।

इनमें से पहले दो का किसी स्पष्टीकरण की आवश्यकता नहीं है, लेकिन तीसरे, शून्यता का बोध की व्याख्या की आवश्यकता हो सकती है। यहाँ मैं बताना चाहूँगा कि शून्यता की देशना को समझने के दो तरीके हैं। पहला विचार यह है कि सभी वस्तुयें (धर्म) शून्य हैं, सभी प्राणी अंततः स्थायी, नित्य नहीं हैं, और सभी वस्तुयें, घटनायें केवल अस्थायी अभिव्यक्तियाँ हैं, जो अस्तित्व में आयी हैं। यह व्याख्या निश्चित रूप से सही है, लेकिन इस अकेली व्याख्या मानव प्राणियों की मुक्ति के बारे में कुछ नहीं कहता है।

बल्कि, हमें शून्यता की देशना को और अधिक सकारात्मक रूप में लेना चाहिए। सभी वस्तुयें कारणों और स्थितियों की अन्योन्य क्रिया से अस्तित्व में आती हैं। लेकिन यह कहना है कि कोई भी पदार्थ नित्य और स्थायी नहीं है, यह नहीं बताता कि किसी का भी अस्तित्व नहीं है या यह कि सब कुछ "शून्य" है। जो कारणों और स्थितियों की अन्योन्य क्रिया से अस्तित्व में आती हैं, सबका निश्चित रूप से अस्तित्व है, लेकिन कुछ भी नित्य एवं अपरिवर्तनीय नहीं है। यदि हम अच्छी घटनाओं की आशा करते हैं, तो हमें स्वयं अच्छे कारणों और स्थितियों का निर्माण करना होगा।

संयोग से, अमितार्थ सूत्र का धर्मदेशना अध्याय-2 कहता है: "सभी वस्तुयें स्वयं शांत हैं और प्रकृति और विशेषताओं में शून्य हैं। वे नहीं तो महा हैं और नहीं न्यून, उनकी नहीं तो उत्पत्ति है या नहीं विनाश, वे नहीं तो स्थिर हैं और नहीं गतिमान, उनमें नहीं तो वृद्धि हैं और नहीं ह्रास। वे रिक्त स्थान की तरह अद्वय हैं। हालाँकि, सभी जीवित प्राणी, गलत और मनमाना आकलन करते हैं। वे मानते हैं

कि 'यह एक बात है' लेकिन 'यह एक और बात है,' या 'यह लाभ है' लेकिन 'वह नुकसान है।' इस तरह के अवास्तविक विचारों को जन्म देते और सभी प्रकार के बुरे कर्मों का निर्माण करते हैं और छह गतियों में पुनर्जन्म लेकर भटकते रहते हैं।

यहाँ हमें यह विचार मिलता है कि सभी वस्तुयें मूल रूप से नहीं तो निर्धारित हैं और नहीं तो भेदमूलक हैं, बल्कि एक महासद्भाव के बराबर हैं। पदार्थ नहीं तो अपने आप में अच्छा है और नहीं बुरा-सामान्य लोगों द्वारा ऐसा देखा जाता है। क्योंकि लोगों में ऐसे गलत विचार हैं जैसेकि "यह अच्छा है" या "यह बुरा है," उनके पास बुरे विचार हैं और वे दुख का अनुभव करते हैं। भेदभाव करके वस्तुओं को देखना एक गलत सोच है और इसलिए पीड़ा है। मूल रूप से, सभी वस्तुयें बिना भेदभाव के हैं और एक महासद्भाव के बराबर हैं-दूसरे शब्दों में, सभी वस्तुयें वैसी ही हैं जैसी उन्हें होनी चाहिए। हम मानव प्राणी कोई अपवाद नहीं हैं।

हम इस लोक में पैदा हुए हैं क्योंकि हमारे पैदा होने की आवश्यकता थी। यह, मनुष्य के रूप में जन्म लेने की अनमोलता के बारे में हमें स्पष्ट अवगत करा देता है-इसके लिए हमें गहरी कृतज्ञता महसूस करनी चाहिए। दूसरों का भी जन्म हुआ क्योंकि उनके पैदा होने की आवश्यकता थी। इसलिए हमें उनकी गरिमा को भी



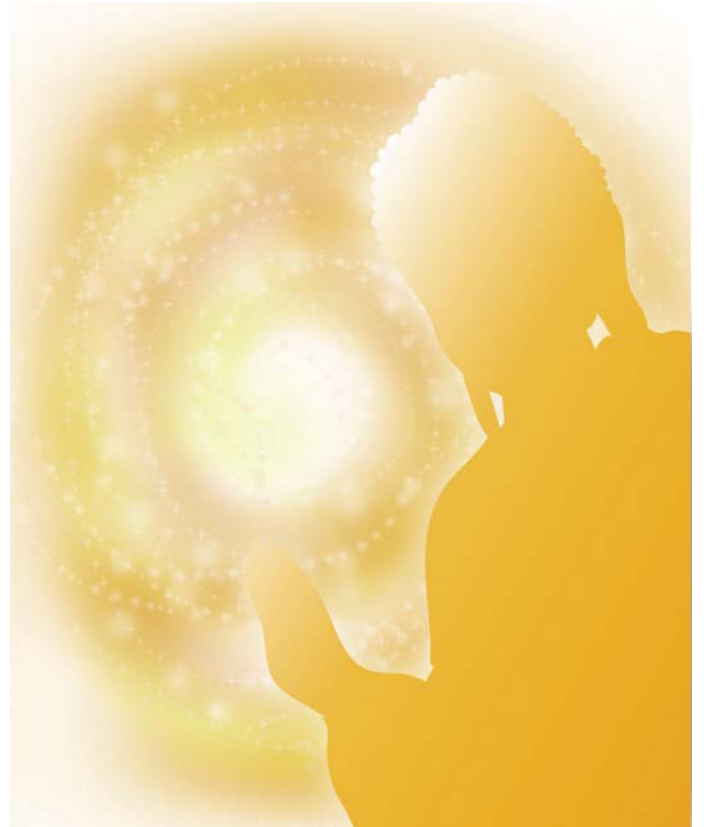


पहचानना और उनकी प्रशंसा करनी चाहिए।

इस अर्थ में, शून्यता की देशना में निराश होने का कुछ भी नहीं है, जिसे पहली परिभाषा के रूप में देखा जा सकता है; बल्कि, यह पूर्ण स्पष्ट है कि यह जीवन का सम्मान करता है। इस महत्वपूर्ण जीवन में निरंतर बने रहने में हमारा आनंद निखर आता है। इसके अलावा, हममें अन्य सभी लोगों के साथ भाईचारा की मजबूत भावना प्रकट होती है, जो बुद्ध की अनुकंपा द्वारा बनी रहती है। इसलिए बुद्ध हमें दिखाते हैं कि जब हम धर्मोपदेश करते हैं तो हमें “तथागत के आसन पर विराजमान होने का अहसास” और शून्यता का गहन बोध होना चाहिए।

तथागत के चीवर, आसन और आवास के तीन नियमों की देशना का सारांश प्रस्तुत करने के लिए, जब हम पुण्डरीक सूत्र की विवेचना अन्य लोगों के सामने करते हैं, तो हमें शून्यता के गहन बोध के आधार पर महाकरुणा के साथ ऐसा करना और मन को सुदृढ़ बनाना चाहिए जो संसार की प्रशंसा और निंदा दोनों से विरक्त रहता है। यही इस अध्याय का सार है।

होक्के सानबू क्यो: काकू होन नो आरामाशी तो योतेन,
(कोसेइप्रकाशन 1991, [संशोधित संस्करण, 2016], पीपी. 104 - 9)



हृदय जो दूसरों के साथ विभेद को स्वीकारता और सामंजस्य स्थापित करता है

जुलाई में रिश्शो कोसेइ काइ ने संयुक्त राज्य अमेरिका में धर्म के प्रचार प्रसार की छठी वर्षगाँठ मनाई। लास वेगास में आयोजित सभा में भाग लेने वाले तीन सौ सदस्यों के साथ, मैंने अमेरिका में संघ के विकास के लिए अपनी कृतज्ञता का नवीनीकरण किया और धर्म के आगे के प्रचार प्रसार के लिए स्वयं को पुनः समर्पित करने का वादा किया।

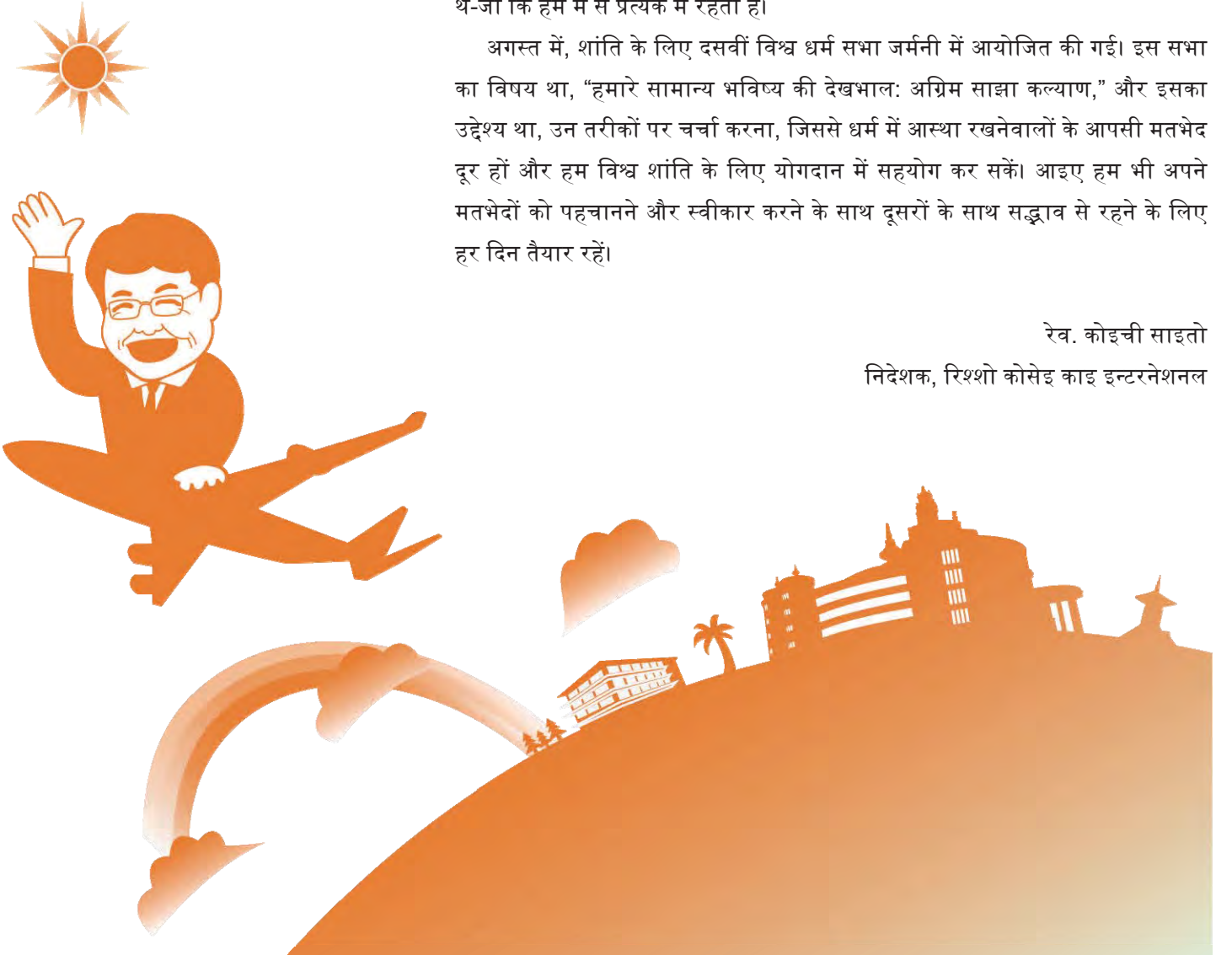
उसी महीने में, हमारे संगठन ने ब्राजील में हमारे धर्म केंद्र के उद्घाटन की चालीसवीं वर्षगाँठ भी मनाई।

मैंने दोनों संघों के बीच आम तौर पर देखा कि उसमें सौहार्द के साथ काम करते हुए युवाओं और बच्चों की उपस्थिति थी और जो संस्मारक घटनाओं में सक्रिय रूप से भाग ले रहे थे, जिसमें उनका व्यक्तित्व एवं मिलकर संगसाथ काम करने की भावना निखर रही थी। वे आयोजन में भाग लेनेवालों की सहायता करने और उन्हें खुश रखने के प्रति उत्साहित से थे।

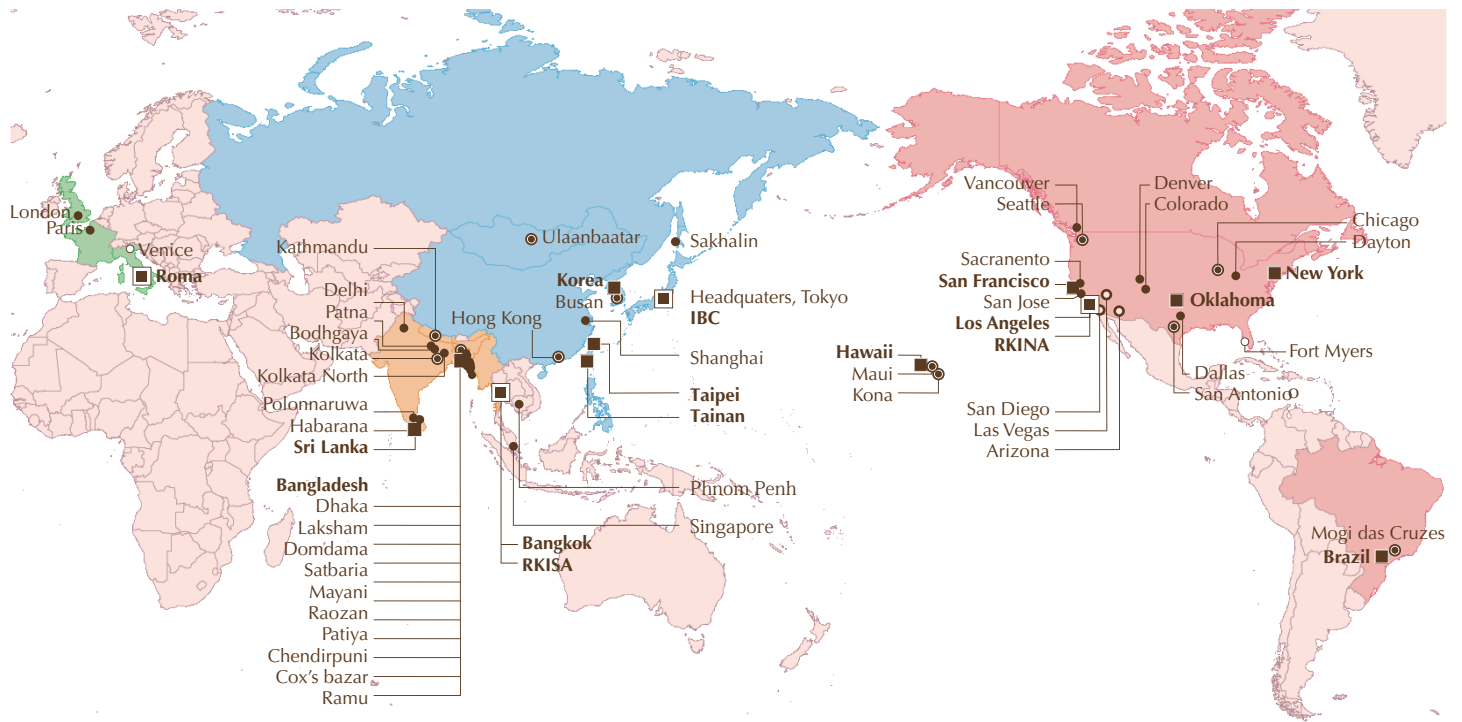
जैसाकि इस महीने के प्रेसिडेण्ट के संदेश में बताया गया है, वे युवा लोग बोधिसत्व के साक्षात् अवतार लग रहे थे, और "दूसरों के प्रति स्नेह और दयालु हृदय" का प्रदर्शन कर रहे थे-जो कि हम में से प्रत्येक में रहता है।

अगस्त में, शांति के लिए दसवीं विश्व धर्म सभा जर्मनी में आयोजित की गई। इस सभा का विषय था, "हमारे सामान्य भविष्य की देखभाल: अग्रिम साझा कल्याण," और इसका उद्देश्य था, उन तरीकों पर चर्चा करना, जिससे धर्म में आस्था रखनेवालों के आपसी मतभेद दूर हों और हम विश्व शांति के लिए योगदान में सहयोग कर सकें। आइए हम भी अपने मतभेदों को पहचानने और स्वीकार करने के साथ दूसरों के साथ सद्भाव से रहने के लिए हर दिन तैयार रहें।

रेव. कोइची साइतो
निदेशक, रिश्शो कोसेइ काइ इन्टरनेशनल



Rissho Kosei-kai: A Global Buddhist Movement



Rissho Kosei-kai Buddhist Church of Hawaii

2280 Auhuhu Street, Pearl City, HI 96782, USA
 TEL: 1-808-455-3212 FAX: 1-808-455-4633
 Email: info@rkhawaii.org URL: <http://www.rkhawaii.org>

Rissho Kosei-kai Maui Dharma Center

1817 Nani Street, Wailuku, HI 96793, USA
 TEL: 1-808-242-6175 FAX: 1-808-244-4625

Rissho Kosei-kai Kona Dharma Center

73-4592 Mamalahoa Highway, Kailua-Kona, HI 96740, USA
 TEL: 1-808-325-0015 FAX: 1-808-333-5537

Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Los Angeles

2707 East First Street, Los Angeles, CA 90033, USA
 POBox 33636, CA 90033, USA
 TEL: 1-323-269-4741 FAX: 1-323-269-4567
 Email: rk-la@sbcglobal.net URL: <http://www.rkina.org/losangeles.html>

Please contact Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Los Angeles

- Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Arizona**
- Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Colorado**
- Rissho Kosei-kai Buddhist Center of San Diego**
- Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Las Vegas**
- Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Dallas**

Rissho Kosei-kai of San Francisco

1031 Valencia Way, Pacifica, CA 94044, USA
 POBox 778, Pacifica, CA 94044, USA
 TEL: 1-650-359-6951 FAX: 1-650-359-6437
 Email: info@rksf.org URL: <http://www.rksf.org>

Please contact Rissho Kosei-kai of San Francisco

- Rissho Kosei-kai of Sacramento**
- Rissho Kosei-kai of San Jose**

Rissho Kosei-kai of New York

320 East 39th Street, New York, NY 10016, USA
 TEL: 1-212-867-5677 Email: rkny39@gmail.com URL: <http://rk-ny.org>

Rissho Kosei-kai of Chicago

1 West Euclid Ave., Mt. Prospect, IL 60056, USA
 TEL: 1-773-842-5654
 Email: murakami4838@aol.com URL: <http://rkchi.org>

Rissho Kosei-kai of Fort Myers

URL: <http://www.rkftmyersbuddhism.org>

Rissho Kosei-kai Dharma Center of Oklahoma

2745 N.W. 40th St., Oklahoma City, OK 73112, USA
 POBox 57138, Oklahoma City, OK 73157, USA
 TEL: 1-405-943-5030 FAX: 1-405-943-5303
 Email: rkokdc@gmail.com URL: <http://www.rkok-dharmacenter.org>

Rissho Kosei-kai Dharma Center of Denver

1255 Galapago St. #809 Denver, CO 80204, USA
 TEL: 1-303-446-0792

Rissho Kosei-kai Dharma Center of Dayton

617 Kling Drive, Dayton, OH 45419, USA
 URL: <http://www.rkina-dayton.com>

The Buddhist Center Rissho Kosei-kai International of North America (RKINA)

2707 East First St., Suite #1, Los Angeles, CA 90033, USA
 TEL: 1-323-262-4430 FAX: 1-323-262-4437
 Email: info@rkina.org URL: <http://www.rkina.org>

Rissho Kosei-kai Buddhist Center of San Antonio

(Address) 6083 Babcock Road, San Antonio, TX 78240, USA
 (Mail) POBox 692042, San Antonio, TX 78269, USA
 TEL: 1-210-561-7991 FAX: 1-210-696-7745
 Email: dharmasanantonio@gmail.com
 URL: <http://www.rkina.org/sanantonio.html>

Rissho Kosei-kai of Seattle's Buddhist Learning Center

28621 Pacific Highway South, Federal Way, WA 98003, USA
 TEL: 1-253-945-0024 FAX: 1-253-945-0261
 Email: rkseattlewashington@gmail.com
 URL: <http://buddhistlearningcenter.org>

Rissho Kosei-kai of Vancouver

Please contact RKINA

Rissho Kosei-kai do Brasil

Rua Dr. José Estefno 40, Vila Mariana, São Paulo-SP, CEP 04116-060, Brasil
 TEL: 55-11-5549-4446, 55-11-5573-8377
 Email: risho@rkk.org.br URL: <http://www.rkk.org.br>

Facebook: <https://www.facebook.com/rishokosseikaidobrasil>
Instagram: <https://www.instagram.com/rkkbrasil>

Rissho Kosei-kai de Mogi das Cruzes

Av. Ipiranga 1575-Ap 1, Mogi das Cruzes-SP, CEP 08730-000, Brasil

在家佛教韓國立正佼成會

〒 04420 大韓民國 SEOUL 特別市龍山區漢南大路 8 路 6-3
6-3, 8 gil Hannamdaero Yongsan gu, Seoul, 04420, Republic of Korea
TEL: 82-2-796-5571 FAX: 82-2-796-1696

在家佛教韓國立正佼成會釜山支部

〒 48460 大韓民國釜山廣域市南區水營路 174, 3F
3F, 174 Suyoung ro, Nam gu, Busan, 48460, Republic of Korea
TEL: 82-51-643-5571 FAX: 82-51-643-5572

社團法人在家佛教立正佼成會

台灣台北市中正區衡陽路 10 號富群資訊大廈 4 樓
4F, No. 10, Hengyang Road, Jhongheng District, Taipei City 100, Taiwan
TEL: 886-2-2381-1632, 886-2-2381-1633 FAX: 886-2-2331-3433

台南市在家佛教立正佼成會

台灣台南市崇明 23 街 45 號
No. 45, Chongming 23rd Street, East District, Tainan City 701, Taiwan
TEL: 886-6-289-1478 FAX: 886-6-289-1488
Email: koseikaitainan@gmail.com

Rissho Kosei-kai South Asia Division

Thai Rissho Friendship Foundation
201 Soi 15/1, Praram 9 Road, Bangkok, Huaykhwang, Bangkok 10310, Thailand
TEL: 66-2-716-8216 FAX: 66-2-716-8218

Rissho Kosei-kai of Kathmandu

Ward No. 3, Jhamsikhel, Sanepa-1, Lalitpur, Kathmandu, Nepal

Rissho Kosei-kai of Kolkata

E-243 B. P. Township, P. O. Panchasayar, Kolkata 700094, India

Rissho Kosei-kai of Kolkata North

AE/D/12 Arjunpur East, Teghoria, Kolkata 700059, West Bengal, India

Rissho Kosei-kai of Bodhgaya Dharma Center

Ambedkar Nagar, West Police Line Road, Rumpur, Gaya-823001,
Bihar, India

Rissho Kosei-kai of Patna Dharma Center

Rissho Kosei-kai of Central Delhi

77 Basement D.D.A. Site No. 1, New Rajinder Nagar,
New Delhi 110060, India

Rissho Kosei-kai of Singapore

Rissho Kosei-kai of Phnom Penh

W.C. 73, Toul Sampaov Village, Sangkat Toul Sangke, Khan Reouseykeo,
Phnom Penh, Cambodia

RKISA Rissho Kosei-kai International of South Asia

Thai Rissho Friendship Foundation
201 Soi 15/1, Praram 9 Road, Bangkok, Huaykhwang, Bangkok 10310, Thailand
TEL: 66-2-716-8141 FAX: 66-2-716-8218

Rissho Kosei-kai of Bangkok

Thai Rissho Friendship Foundation
201 Soi 15/1, Praram 9 Road, Bangkok, Huaykhwang, Bangkok 10310, Thailand
TEL: 66-2-716-8216 FAX: 66-2-716-8218 Email: info.thairissho@gmail.com

Rissho Kosei Dhamma Foundation

No. 628-A, Station Road, Hunupitiya, Wattala, Sri Lanka
TEL: 94-11-2982406 FAX: 94-11-2982405

Rissho Kosei-kai of Polonnaruwa

Rissho Kosei-kai Bangladesh

85/A Chanmari Road, Lalkhan Bazar, Chittagong, Bangladesh
TEL/FAX: 880-31-626575

Rissho Kosei-kai Mayani

Mayani Barua Para, Mirsarai, Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai Damdama

Damdama Barua Para, Mirsarai, Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai Patiya

China Clinic, Patiya Sadar, Patiya, Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai Satbaria

Village: Satbaria Bepari Para, Chandanaih, Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai Chendhirpuni,

Village: Chendhirpuni, P.O.: Adhunogar, P.S.: Lohagara, Chittagong,
Bangladesh

Rissho Kosei-kai Dhaka

408/8 DOSH, Road No 7 (West), Baridhara, Dhaka, Bangladesh

Rissho Kosei-kai Laksham

Village: Dhupchor, Laksham, Comilla, Bangladesh

Rissho Kosei-kai Cox's Bazar

Ume Burmize Market, Tekpara, Sadar, Cox's Bazar, Bangladesh

Rissho Kosei-kai Cox's Bazar, Ramu Shibu

Rissho Kosei-kai Raozan

Dakkhin Para, Ramzan Ali Hat, Raozan, Chittagong, Bangladesh

Buddiyskiy khram "Lotos"

4 Gruzinski Alley, Yuzhno-Sakhalinsk 693005, Russia
TEL: 7-4242-77-05-14

Rissho Kosei-kai of Hong Kong

Flat D, 5/F, Kiu Hing Mansion, 14 King's Road, North Point, Hong Kong, China

Rissho Kosei-kai Friends in Shanghai

Rissho Kosei-kai of Ulaanbaatar

(Address) 15F Express Tower, Peace avenue, khoro-1, Chingeltei district,
Ulaanbaatar 15160, Mongolia
(Mail) POBox 1364, Ulaanbaatar-15160, Mongolia
TEL: 976-70006960 Email: rkkmongolia@yahoo.co.jp

Rissho Kosei-kai of Erdenet

2F Ikh Mandal building, Khurenbulag bag, Bayan-Undur sum,
Orkhon province, Mongolia

Rissho Kosei-kai di Roma

Via Torino, 29, 00184 Roma, Italia
TEL/FAX: 39-06-48913949 Email: roma@rk-euro.org

Rissho Kosei-kai of the UK

Rissho Kosei-kai of Paris

Rissho Kosei-kai of Venezia

Rissho Kosei-kai International Buddhist Congregation (IBC)

166-8537 東京都杉並区和田 2-7-1 普門メディアセンター 3F
Fumon Media Center 3F, 2-7-1 Wada, Suginami-ku, Tokyo 166-8537, Japan
TEL: 03-5341-1230 FAX: 03-5341-1224 URL: <http://www.ibt-rk.org>